

it is p. for us to attend to the stranger : उचितं नोऽतिथिपर्युपासनम्, Sa. i. Ph. : *I will do what is p.* : यथाहमाचरिष्यामि, K. ; *should do what is p.* : कुर्याद्यथोचितम्, H. II. Own : q.v. : स्व (f. स्वा). III. Peculiar : q.v. : विशेष- in comp. Ph. : *p. noun* : perh. विशेषनामन् (n.) ; संज्ञा, Pāṇini, Vi. 3. 57.

PROPERLY : I. Suitably, fitly : (1) युक्तम्, उप- ; (2) उचितम्, सम्- ; (3) better by adj. II. Strictly : (1) तत्त्वतः ; (2) यथार्थतः.

PROPERTY : I. Quality : q.v. : (1) धर्मः ; (2) गुणः. II. What is possessed : (1) सम्पत्तिः ; (2) द्रव्यम् (=thing), *immoveable and moveable p.* : स्थावरं जङ्गमं द्रव्यम्, Vri. ; (3) धनम् (=money), *woman's p.* : स्त्रीधनम्, Mi. ; (4) अर्थः (=3.), *of paternal p.* : पित्र्यस्यार्थस्य, Da. ; (5) वित्तम् : v. Money ; (6) स्वम् (rare), *divided p.* : विभक्तं स्वम्, Da.

PROPHECY : perh. मविष्यद्वादः and sim. comp.s. ; better by verb.

PROPHECY : (1) कथयति (कथ्, c. 10. = to say) or वि- आदिशति (दिश्, c. 6. = to direct) (when the sense is clear) ; (2) अनागतं (f. तां) or मविष्यन्तं (न्तीं, त्) वदति (वद्, c. 1.), etc.

PROPHET, PROPHETERS : (1) सिद्ध (f. द्वा), *saying of a p.* : सिद्धादेशः Ram. i. ; (2) साधु (f. ध्वी), *it was told by a p. in my presence* : शिवादेशकेन साधुना मत्समक्षं व्यादिष्टा, Mal. i. ; (3) मविष्यद्भक्तृ (f. क्ती : ?).

PROPHETIC, -AL : expr. by verb or circumlo.

PROPHETICALLY : (1) perh. सिद्धवत् or साधुवत् ; (2) by circumlo.

PROPINQUITY : सन्निकर्षः : v. Nearness.

PROPTIATE : (1) प्रसादयति (c. of सद्), *p d Duvāsas* : दुर्वाससं प्रसादयमास, V. p. i. 9. 18. ; (2) अनुरञ्जयति (c. of रञ्ज् = conciliate).

PROPTIATION : I. The act. : (1) प्रसादनम्, ना, *attended to the p. of gods* : प्रसादनामाद्रियतामराणाम्, N. xiv. 1. ; (2) अनुरञ्जनम् (=conciliation). II. The means : बलिः (=offering).

PROPTIATOR : (1) प्रसादक (f. दिका) ; (2) अनुरञ्जक (f. झिका).

PROPTIATORY (adj.) : (1) प्रसादन (f. नी) ; (2) अनुरञ्जक (f. झिका).

PROPTIOUS : I. Favourable, kind : q.v. : (1) प्रसन्न (f. न्ना) ; (2) सद्य (f. या). II. Auspicious : (1) शुभ (f. भा) ; (2) कल्याण (f. णी) ; (3) मङ्गल (f. ला) ; (4) मङ्गल्य (f. ल्या) ; (5) कल्याणकर (f. री) ; (6) क्षेमकर (f. रा) ; etc.

PROPTIOUSLY : I. Kindly : q.v. : प्रसन्नमनसा. II. Auspiciously : expr. by adj.

PROPTIOUSNESS : I. Kindness : q.v. : प्रसादः. II. Auspiciousness : expr. by adj., *p. of season* : शुभतुः.

PROPORTION : I. Symmetrical arrangement : perh. अङ्गसौष्ठवम्. Ph. : *her body is in perfect p.* : तस्याश्चतुरस्रशोमि (अन्यूनान्तिरिक्तम्, M.n.) वपुः, Ku. i. 32. ; *the building is out of p.* : *विषमपरिमाणं हर्म्यम्. II. Share, lot : q.v. : अंशः. III. Relation, adaptation : q.v. : सम्बन्धः. Ph. : *in p. to his strength* : तस्य वीर्यानुसारेण : v. According. IV. In math. : *सम्बन्धसाम्यम् ; *the four quantities are in p.* : ते चत्वारो राशयः समाननिष्पत्ति-युता भवन्ति, K.d.

PROPORTION (v.) : perh. समीकरोति : v. Also to adjust.

PROPORTIONAL : I. Lit. : समप्रमाण (f. णा ?). II. In math. : v. Proportion (IV.).

PROPORTIONALLY, PROPORTIONATELY : (1) यथाप्रमाणम् ; (2) sometimes प्रतिप्रतीकम् (=in every limb.).

PROPOSAL : (1) उपन्यासः ; (2) प्रस्तावः ; (3) कल्पः.

PROPOSE : (1) उपन्यस्यति (अस्, c. 4. = to put forward) ; (2) प्रस्तौति (स्तु, c. 2.) or प्रस्तावं करोति (as a beginning) ; (3) कल्पयति (कृप्, c. 10. = to devise, intend : q.v.).

PROPOSER : expr. by verb.

PROPOSITION : I. Proposal : q.v. II. In logic etc. : प्रतिज्ञा. III. In gram. : वाक्यम्. IV. In Poetry : कथामुखम्.

PROPOUND : (1) उपन्यस्यति (अस्, c. 4.) ; (2) उपक्षिपति (क्षिप्, c. 6.), *p. another doctrine* : पक्षान्तरमुपक्षिपन्ति, D.s.

PROPRIETARY : expr. by comp., *p. right* : स्वाम्यधिकारः.